IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

प्राचीन भारतीय राजनैतिक चिंतन परंपरा तथा गीता मे प्रतिपादित लोक संग्रह की अवधारणा का दार्शनिक विवेचन

डॉ. इन्दु प्रकाश सिंह

सहायक प्रोफेसर दर्शन शास्त्र

हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, प्रयागराज

dripsingh22@gmail.com

सारांश – भारतीय राजनैतिक चिंतन में राज्य का प्रमुख राजा होता था तथा उसका मुख्य कार्य 'लोकसंग्रह' का संपादन था।[1] इसका अर्थ यह है कि राजा को लोककल्याण की कामना से अपनी सम्पूर्ण प्रजा में पारस्परिक सहयोग स्थापित करना चाहिए जिससे वे परस्पर हार्दिकता अनुभव करते हुए राज्य के प्रति अटूट निष्ठा रख सकें। परिणामस्वरूप धर्म, अर्थ, काम एवंमोक्ष की सिद्धि हो सके और प्रत्येक अपने स्वाभाविक कर्म एवं दक्षता के साथ श्रेय संपादन करने में शक्य हो सके। मनु ने भी लिखा है कि,–इस जगत में राज के अभाव में सर्वत्र हाहाकार होने लगा, तब 'लोकरक्षा' के लिए ईश्वर ने राजा को बनाया–

vjktdl fg ykds·fLeuU lorks fonzrs Hk;krA

j{kkFkZeL; loZL; jktkuel`tRizHkq%AA[2]

ध्यातब्य है कि 'मनु' भी लोकसंग्रह के लिए ही राजा के सृष्टि की आवश्यकता को स्वीकर करते हैं। अतः 'लोकरक्षा' या लोकसंग्रह के लिए ही सम्पूर्ण राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं व्यावहारिक नीति–नियम या व्यवस्थायें जन्म लेती हैं।

मुख्य शब्द – लोकसंग्रह, मनु', राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व्यावहारिक, नीति–नियम, साध्य, साधन, 'लोकरक्षा', आत्मौपम्य,।

DOI: 10.48175/568